International Journal of Information Movement Vol. VII Issue III (July 2022)
Website: www.ijim.in ISSN: 2456-0553 (online) Pages 17-22

ब्रिटिश काल से पूर्व हरियाणा में कृषि की स्थिति का पुनरावलोकन

डॉ .मंजू बाला
असिस्टेंट प्रोफेसर ,इतिहास विभाग,
जीवन चानन महिला महाविद्यालय,
असंध ,करनाल) हरियाणा(
Email: manju.panghal81@gmail.com

सारांश-आजकल की तरह ही पिछले समय में भी हरियाणा कृषि प्रधान प्रदेश था। यहाँ की लगभग 90 प्रतिशत से भी कुछ ऊपर जनसंख्या जीवनयापन के लिए परोक्ष या अपरोक्ष रूप से कृषि पर निर्भर रहती थी। ये लोग गाँव में रहते थे। शेष जनसंख्या कस्बों या नगरों में रहते हुए लघु उद्योग, व्यापार तथा अन्य धंधों से गुजारा करती थी। यहाँ की भूमि कुल मिलाकर उपजाऊ थी। परन्तु वर्षा की कमी व सदानीरा नदियों के अभाव से यहाँ कृषि अधिक उन्नत स्थिति में नहीं हो सकती थी। इसके बावजूद भी आजकल की तरह ही मध्यकाल में भी इस क्षेत्र का किसान लगभग सारे समय अपने खेत में ही लगा रहता था। उसके द्वारा साल में दो तरह की फसलें उगाई जाती थी। बसन्त ऋतु में' खरीफ 'फसलें व शरद् ऋतु में रबी फसलें।' खरीफ 'में धान्य फसलें ज्वार, बाजरा, मूंग, मोठ, लोबिया, मकई, कनगी, मुंडोआ आदि थी। जबकि' खरीफ 'की जब्ती फसलों में मुख्यतः गन्ना, शकरकंदी, अरबी, आलू आदि सम्मिलित थी। इसी तरह 'रबी 'के धान्य समूह में गेहूँ, जौ, चना, बाजरा, गोचनी) गेहूँ व चना मिले हुए(, गोगरा, सरसों, तोरिया, मसूर, अरहर और' रबी 'की जब्ती फसलों में कासनी, मेथी, तम्बाकू, अजवाइन और सब्जियां जैसे कद्दू, टिंडा, पेठा आदि सम्मिलित थी।

1.0प्रस्तावना -

ब्रिटिश काल के पहले से ही भारत की अर्थव्यवस्था में कृषि की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। कृषि मध्यकालीन भारत का मुख्य व्यवसाय था। यह राज्य के राजस्व का मुख्य स्रोत था। इस समय 3/4 से भी अधिक जनसंख्या गाँवों में रहती थी और प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से कृषि से जुड़ी हुई थी। इस समय से पहले के युगों में भी भारत की अर्थव्यवस्था में सामान्य तौर पर और विशेषकर पंजाब) जिसमें हरियाणा भी शामिल था (में कृषि को प्रमुखता दी जाती थी।

यहाँ के गाँव पूरी तरह से आत्मनिर्भर थे। गाँव के लोगों द्वारा इतना उत्पादन कर लिया जाता था जिससे वे न केवल अपनी जरूरतें पूरी करते थे, बल्कि अतिरिक्त उत्पादन को देश के अन्य भागों व कुछ मात्रा में विदेशों में भी भेजा जाता था। हालांकि बाहरी देशों के साथ इनका संपर्क कम था। हर गाँव का अपना खुद का बाजार होता था जिसमें प्रमुख दुकानदार महाजन) साहूकार (का काम भी करते थे। वे जीवनोपयोगी वस्तुओं को बेचते थे और किसानों से व यहाँ तक की जमींदारों से कच्चा माल खरीदते थे।

इस काल में खेती करने का तरीका पहले की तरह अविकसित नहीं था। लकड़ी का हल, हस्त कुदाल, फावड़ा, धरती को समतल करने वाला बिम और दरांती आदि उपकरण भूमि पर उत्पादन की पूरी प्रक्रिया के दौरान आमतौर पर इस्तेमाल होते थे। खेती बैलों व कभी-कभी भैंसों के साथ की जाती थी। किसानों द्वारा खेतों की उर्वरक शक्ति को बढ़ाने के लिए सामान्यतय पशुओं के गोबर का खाद के रूप में इस्तेमाल किया जाता था।

कृषि उन लोगों के लिए पूरे साल चलने वाला व्यवसाय था, जो इससे जुड़े हुए थे। किसान दिन-रात अपने

खेतों में काम करते थे। वे गहनता से जमीन जोतने के साथ-साथ फसलों को अदल-बदल कर व साल में दो फसलें) खरीफ व रबी (बोना जानते थे। दोनों फसलों की कटाई के बाद किसान पूरे साल के लिए अनाज व पशुओं के चारे का संग्रह कर लेते थे। पूरे साल में किसान कितनी मात्रा में फसल प्राप्त कर लेते थे इस बारे में बड़ी ही मूल्यवान जानकारी विशेषकर अलाऊद्दीन खिलजी के समय की ठाकुर फेरू ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ' गणितसार 'में प्रस्तुत की है और मुगलकाल की जानकारी ठाकुर फेरू से भी अधिक अबुल फजल से प्राप्त होती है। लेकिन इनके द्वारा दिए गए प्रमाण केवल उत्तम प्रकार की भूमि में होने वाली उपज के है। इस प्रकार की भूमि को पोलज भूमि कहते थे। इससे कम किस्म की उपजाऊ भूमि अर्थात् परौती, चाचर और बंजर भूमि में उपज अपेक्षाकृत कम होती थी। साथ ही सिंचाई और खुश्की का भी प्रभाव रहता था तथा न ही ये फसलें सारे हरियाणा में एक जैसी होती थी। वास्तविक स्थिति इस प्रकार थी कि जिन इलाकों में वर्षा अधिक होती थी या सिंचाई की व्यवस्था थी, वहाँ गेहूँ, गन्ना, कपास आदि बहुतायत से पैदा होते थे और जो क्षेत्र खुश्क थे वहाँ ज्वार, बाजरा, मूंग, मोठ, चना आदि अधिक होते थे। समकालीन स्रोतों से हमें इस विषय में काफी महत्त्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है कि कौन सा क्षेत्र किस फसल के लिए प्रसिद्ध था। उदाहरणार्थ इब्नबतूता अपने यात्रा-विवरण में सिरसा के चावलों की प्रशंसा करते हुए कहते हैं कि' यहाँ का चावल बड़ा ही अच्छा है। इसकी उपज भी खूब है। यहाँ से यह देहली भेजा जाता है। 'तैमूर अपनी आत्मकथा में सिरसा के गन्ने की बड़ी दिल खोलकर तारीफ करता है। अबुल फजल ने' आईन 'में महम की कपास की तारीफ की है। पर उसे सबसे अधिक यहाँ का गन्ना पसन्द आया। पैलसर्ट ने दक्षिण हरियाणा के विषय में मूल्यवान उल्लेख दिए है। गुड़गाँव और फरीदाबाद के जिलों में वह नील की खेती का उल्लेख करता है। यहाँ लगभग एक हजार से भी अधिक नील की गांठें प्रतिवर्ष पैदा होती थी। बर्नियर ने भी नील के उत्पादन का उल्लेख किया है। उसने पलवल क्षेत्र में चावल और गन्ने के पैदा होने की भी चर्चा की है। यहाँ की मुख्य फसल बाजरा ने भी उसका ध्यान आकृष्ट किया था। कृषि कार्य मुख्यता हिन्दुओं द्वारा सम्पन्न किए जाते थे। अतः अधिकांश मुस्लिम सुलतानों ने कृषि के विकास की तरफ ध्यान नहीं दिया। कृषकों को इस काल में अनेक प्रकोपों एवं दुर्भिक्षों का भी सामना करना पड़ा जिससे उनकी आर्थिक स्थिति और खराब हो गई। यद्यपि कभी-कभी सुलतानों द्वारा उन्हें कुछ खास सहायता भी दी जाती थी जैसे कि मुहम्मद तुगलक की कृषि योजना। हालांकि दीर्घकालीन सुधार योजनाओं के अभाव से उनकी स्थिति में विशेष परिवर्तन नहीं आ पाया। इस दिशा में फिरोज तुगलक के कार्य भी प्रशंसनीय रहे हैं। उसने सिंचाई की व्यवस्था कर व करों में कटौती करके कृषि को निश्चित रूप से उन्नत बनाया था। इससे कृषकों की स्थिति में भी सुधार हुआ। पर सामान्य रूप से इस काल में अधिकतर सुलतानों ने गाँवों और कृषि सुधारों की उपेक्षा की। अतः ग्रामों और कृषकों की आर्थिक उन्नति संभव नहीं हो पाई। फिर भी इस क्षेत्र में अन्न की भरमार थी जिस कारण किसान सामान्य तौर पर संतुष्ट रहते थे। वस्तुतः कृषि व ग्राम उद्योगों के चलते उन दिनों यहाँ के गाँव स्वावलम्बी थे।

2.0सिंचाई के साधन

भारत और विशेषकर पंजाब के अन्य हिस्सों की तरह ही यहाँ अधिकांशतः कृषि वर्षा पर निर्भर करती थी। इसके अतिरिक्त सूखे से निपटने के लिए सिंचाई के कुछ अन्य साधन जैसे - कुएं, तालाबों व जोहड़ों आदि का प्रयोग भी होता था। जार्ज थामस ने अपने संस्मरणों में यहाँ कुंओं से की जाने वाली सिंचाई का अच्छा उल्लेख किया है। वह कहता है कि ये कुएं बड़े गहरे होते थे और इनसे पानी निकालना काफी कठिन काम था। प्रत्येक गाँव में प्रायः एक या दो कुएं होते थे जिनसे कृषक मिलकर पानी निकालते थे। वह कहता है कि हिसार में ऐसे कुल 300 कुएं थे। इनमें से हांसी में 30, महम में 100, टोहाना में 6 और शेष

अन्य जगह थे। बाबर ने भी अपनी आत्मकथा में यहाँ ऐसे कुंओं के होने का उल्लेख किया है। जिनमें रहट)persion wheel (लगे होते थे। रहट लगे कुएं विशेषकर करनाल व पानीपत जैसे क्षेत्रों में थे, जहाँ पानी की सतह ऊपर थी।

मध्यकाल में भारत के विभिन्न क्षेत्रों में सिंचाई के लिए) कुंओं के अतिरिक्त (बहुत सी नहरों का निर्माण भी किया गया था। जिनसे भूमि की उत्पादकता शक्ति काफी बढ़ गई थी। इस समय ऐसी ही नहरों की खुदाई इस क्षेत्र में भी की गई थी। इस कार्य में सबसे बड़ा योगदान फिरोज तुगलक का था। उसके द्वारा लाई जाने वाली नहरों में सबसे बड़ी व महत्त्वपूर्ण पश्चिमी यमुना नहर थी जिसका निर्माण 1356 में किया गया था। यह यमुना नदी से ताजेवाला के स्थान से निकाली गई थी और अम्बाला, करनाल, हिसार, रोहतक और जीन्द के कुछ हिस्सों को सिंचित करती थी। बाद में कई सालों तक यह उपेक्षित रही, लेकिन 1568 में सम्राट अकबर द्वारा और 1656 में शासक शाहजहाँ के इंजीनियर अली मर्दान खां ने इसका पुनर्निर्माण करवाया। दूसरी नहर सतलुज नदी से निकाली गई जोकि झज्जर तक पहुँचती थी। तीसरी नहर सिरमौर की पहाड़ियों से निकलती थी और हाँसी व बाद में हिसार तक पहुंचाई गई थी। चौथी नहर घग्घर से खुदवाकर सिरसा के किले तक लाई गई। यमुना से भी एक नहर इस कस्बे तक लाई गई थी। यह पाँचवीं नहर थी।

इन पाँच नहरों के अतिरिक्त फिरोजशाह ने इस क्षेत्र में 100 के करीब कुएँ भी खुदवाए। कई जगह तालाबों के निर्माण में सहायता दी और बरसाती नदियों पर बांध बंधवाकर झीलें बनवाई। इसका पानी पीकर यहाँ की सदियों से प्यासी भूमि निहाल हो गई। उसने स्वर्ण उगलना शुरू कर दिया। फिरोजशाह ने जो अपने पूर्वजों के समय का ऊँचा भूमि कर कम किया था उसका घाटा सिंचाई कर से पूरा किया गया। यह कर कोई 1/10 प्रतिशत के बराबर था। फिरोजशाह की भूमिकर से कुल आय 575 लाख रुपये थी जिनमें से 200 लाख केवल हरियाणा से ही आते थे। पर इतने पर भी यह सब दुखता न था, क्योंकि लोग खुशहाल हो गए थे।

फिरोजशाह के इन सुधार कार्यों से हरियाणा क्षेत्र की काफी भूमि सिंचित हुई। खेतों में काफी उन्नति हुई और उत्पादन खूब बढ़ गया। लेकिन यह खुशहाली लंबे समय तक कायम न रह सकी। क्योंकि फिरोजशाह के कमजोर उत्तराधिकारी दरबारी षड्यंत्रों में ही फंसे रहे। उनका इस तरफ से ध्यान बिल्कुल हट गया और किसानों की दशा में फिर से गिरावट आ गई। यह स्थिति अकबर के शासन काल तक चलती रही। अकबर ने इस ओर ध्यान दिया और कुछ नहरों की मरम्मत करवाई। शाहजहाँ ने भी इन नहरों को ठीक करवाया था। इसके अतिरिक्त शाहजहाँ ने पश्चिमी यमुना नहर से सफीदों के स्थान से एक अन्य नहर शाहजहाँबाद) दिल्ली (तक भी निकलवाई थी जिसका नाम' नहरें बहिश्त 'रखा गया था। शाहजहाँ के इस कार्य से कृषि में काफी उन्नति हुई। पर खेद का विषय है कि उन्नीसवीं सदी के अराजकता के समय में ये सब नहरें लगभग बर्बाद हो गई थी।

3.0भूमिकर की व्यवस्था

मध्यकालीन राज्य सैनिक-सामंतवादी राज्य थे। ऐसे राज्यों में प्रजा का शोषण होता था। प्रजा के शोषण का सर्वप्रमुख साधन उन पर लगाए जाने वाले विभिन्न कर थे। जिनकी संख्या व वसूली की पद्धति समय ≥पर परिवर्तित व परिवर्धित होती रहती थी। सभी करों में भूमि कर राज्य की आय का मुख्य स्रोत था। कुतुबुद्दीन ऐबक ने जब भारत में अपना राज्य कायम किया तो उसके पास उचित साधन नहीं थे। अतः उसने साधनों को प्राप्त करने के लिए लोगों से खूब पैसा बटोरा। हरियाणा प्रदेश भी उसकी चपेट में आया। सही आंकड़ों के अभाव में यह तो नहीं कहा जा सकता कि उसके द्वारा प्राप्त की गई भूमि कर की दर क्या होगी। पर हाँ, कृषक के भूमि स्वामित्व के अधिकार के आधार पर यह अनुमान हो सकता है कि वह 50 प्रतिशत से कुछ ऊँचा ही था। सल्तनत काल के अन्य शासकों द्वारा भी लगभग इसी नीति का

अनुसरण कर सामान्य जनता से भारी भूमिकर वसूला गया। फिरोज तुगलक को छोड़कर अन्य सुलतानों ने यहाँ की जनता का बड़ा भारी शोषण किया। फलतः यहाँ की आर्थिक व्यवस्था बिगड़ गई और कृषि चैपट हो गई। बहुधान्यक प्रदेश कंगाल प्रदेश बन कर रह गया।

मुगलों के आगमन के पश्चात् स्थिति में कुछ परिवर्तन आया। मुगल शासकों ने इस ओर ध्यान दिया। विशेषतः अकबर ने इस दिशा में काफी महत्त्वपूर्ण कदम उठाए। 1570 से 1580 तक कोई 10 वर्ष के अथक प्रयत्न के बाद अपने मंत्री टोडरमल की सहायता से उसने' जब्ती प्रणाली 'अथवा' टोडरमल का बंदोबस्त 'लागू किया। कई लोग इसे आईने-दह-साला भी कहते हैं। इस प्रणाली के अनुसार प्रत्येक ग्राम, परगने तथा प्रान्त की कृषि योग्य भूमि की पैमाइश के लिए 40 अंगुल के गज का प्रयोग किया गया। इसके अतिरिक्त अकबर ने 3500 वर्ग गज का एक बीघा भी निश्चित किया तथा राजस्व निर्धारण के लिए भूमि को चार विभिन्न वर्गों व श्रेणियों में बांटा। इस वर्गीकरण का आधार भूमि की किस्म या उनका उपजाऊपन ही नहीं था, बल्कि इस पर होने वाली कृषि का निरन्तर जारी रहना भी था। मालगुजारी भूमि की स्थिति को देखकर ठीक-ठीक निश्चित की जाती थी। वह उपज के 1/3 भाग के करीब होती थी। औरंगजेब के शासन काल तक यही स्थिति चलती रही। लेकिन औरंगजेब को अपनी लंबी-लंबी लड़ाइयों के लिए धन इकट्ठा करने के लिए अकबरी लीक से हटना पड़ा। उसने भूमि कर कुछ अधिक बढ़ा दिया। साथ ही किसानों पर जजिया आदि कई कर और भी लाद दिए। परिणामस्वरूप जगह-जगह किसानों के विद्रोह हुए। निष्कर्षतः हम कह सकते है कि एक-दो शासकों को छोड़कर यहाँ के लगभग सभी सैनिक सामंतवादी शासकों ने लोगों का काफी शोषण किया।

4.0अकाल

हरियाणा प्रदेश में, विशेषतः दक्षिण-पश्चिम तथा पश्चिमी भागों में काफी अकाल पड़ते थे। ये अकाल वर्षा के न होने से तथा राजनैतिक अराजकता के कारण से पड़ते थे। साथ ही इनकी रोकथाम के लिए किसी योग्य नीति के न होने, सिंचाई के कृत्रिम साधनों की कमी और आवागमन के अविकसित साधन आदि भी इनकी गति को तीव्र कर देते थे। इसके अतिरिक्त बाद वाली स्थिति में सेनाएं लोगों की फसलों को बर्बाद कर देती थी और उन्हें लूट लेती थी जिससे अभाव की स्थिति पैदा हो जाती थी। इसलिए यहाँ के लोगों को अक्सर काफी खतरनाक अकालों का सामना करना पड़ा।

हालाँकि मुगल शासकों विशेषकर अकबर व उसके बाद के शासकों द्वारा अकालग्रस्त लोगों के तनाव को कम करने की नीति का अनुसरण किया गया। जैसे कि उन्होंने अकालग्रस्त क्षेत्रों के लोगों के राहत कार्यों के लिए बहुत-सा धन व्यय किया और भू-राजस्व में छूट प्रदान की। परन्तु समस्या के विस्तार की दृष्टि से व प्रशासन की अयोग्यता के कारण मुगल अकाल संबंधी इस समस्या को रोकने में असफल रहे और किसी भी हालत में एक विस्तृत व दीर्घकालीन अकाल नीति नहीं बना पाए।

5.0कृषि का वाणिज्यीकरण

मध्यकाल में कृषकों द्वारा बड़ी संख्या में फसलों की वृद्धि का प्रयास भारतीय कृषि की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता रही है। हालाँकि प्राचीन काल की तरह इस समय में भी अधिकतर किसान पारम्परिक फसलें जैसे -गेहूँ, ज्वार, बाजरा और विभिन्न प्रकार की दालें इत्यादि ही उगाते थे, लेकिन मुगल सम्राटों व अमीरों की व्यापार में रुचि के कारण कृषि का वाणिज्यीकरण आरम्भ हुआ। इसके लिए उन्होंने न केवल किसानों को बाजार के लिए नकदी फसलें उगाने के लिए प्रोत्साहित किया, बल्कि उन्हें सिंचाई और तकावी ऋण जैसी सुविधाएं भी प्रदान की। परिणामस्वरूप मुगलकाल में भारत के अन्य हिस्सों की तरह हरियाणा में भी जीवन यापन के साथ-साथ बाजार के लिए भी फसलों का उत्पादन आरम्भ हो गया। इसका एक स्पष्ट

उदाहरण मुगल रिकार्ड में मिलने वाला फसलों का वर्गीकरण है जो लगभग नकदी फसलों के आधुनिक वर्गीकरण जैसा ही है। जैसे कि' आईन-ए-अकबरी 'में मिले शब्द' जिन्स-ए-कामिल 'या' जिन्स-ए-आला' जो कपास व गन्ने जैसी उच्च कोटि की फसलों के लिए इस्तेमाल किए गए। ये फसलें मुख्यतः बाजार के लिए उगाई जाती थी। इसी प्रकार' जिन्स-ए-अदना 'शब्द विभिन्न प्रकार के मोटे अनाजों के लिए इस्तेमाल किया गया, जिनका मूल्य बहुत कम होता था। ये फसलें आमतौर पर स्थानीय प्रयोग में ही लाई जाती थी। इसके अतिरिक्त कृषि संबंधी उत्पादन के अधिशेष से बहुत सारे उद्योग व शिल्प भी चलते थे जिनका बड़ी मात्रा में उपयोग व भंडारण किया जाता था। कृषि उपज से पनपे अत्यधिक महत्त्वपूर्ण उत्पादन रस्सियां, टोकरियां, गुड़, विभिन्न प्रकार का तेल, इत्र व मदिरा आदि थे। तेल का उत्पादन आॅयल प्रेस) घानी (की प्रक्रिया से किया जाता था और मदिरा को अपरिष्कृत गुड़, जौ व चावल से बनाया जाता था। लेकिन सामाजिक स्थिति, सीमित अवसर और प्रशासनिक उत्पीड़न गाँव के शिल्पकारों के लिए इनके उत्पादन के विकास में बड़ी बाधाएं थी।

सोलहवीं शताब्दी में पूरे भारत में व्यापार व वाणिज्य का विकास हो रहा था। इस समय हरियाणा में भी न केवल आन्तरिक बल्कि दूसरे देशों के साथ बाहरी व्यापार भी पनप रहा था। इस प्रान्त का स्थानीय व्यापार बहुत ही विकसित था। पंजाब के हर इलाके में उनके अपने स्वदेशी उद्योग थे, जिनके उत्पादन का एक गाँव से दूसरे गाँव में आदान-प्रदान किया जाता था। ऐसा ही एक उद्योग सत्रहवीं शताब्दी में में पानीपत में विकसित हो चुका था। पानीपत का यह कपड़ा उद्योग न केवल देश के आंतरिक हिस्सों की व्यापारिक जरूरतों को पूरा करता था, बल्कि विदेशों में भी इसका उत्पादन निर्यात किया जाता था। इसके अतिरिक्त इस क्षेत्र से घी, जौ, चावल, चना, नील, नोशादर, गन्ना आदि का भी निर्यात होता था |लेकिन वाणिज्यीकरण की यह प्रक्रिया इस क्षेत्र में अतिश्योक्तिपूर्ण ढंग से दिखती है क्योंकि किसी भी राज्य की संचार व्यवस्था ही उसके व्यापार, वाणिज्य व उद्योगों की स्थिति दर्शाती है। हरियाणा में भी मध्यकाल में विभिन्न शासकों द्वारा व्यापार को प्रोत्साहन देने के लिए कई मार्गों का निर्माण किया गया। मध्यकाल के विभिन्न अंतर्देशीय व देशीय मार्ग निम्नलिखित थे।

5.1दिल्ली आगरा मार्ग

यह आधुनिक राष्ट्रीय मार्ग के साथ-साथ दिल्ली, बल्लभगढ़, फरीदाबाद, पलवल, होडल में से गुजरता हुआ आगरा व आगे दक्षिण चला जाता था।

5.2दिल्ली, जयपुर, जोधपुर, अहमदाबाद मार्ग

ये वास्तव में कई मार्ग थे जो कि हरियाणा में तो दिल्ली, गुड़गाव, सोहना, तावडू, रेवाड़ी तक मार्ग बने रहते थे पर बाद में आगे अलग-अलग दिशाएं पकड़ लेते थे।

5.3दिल्ली, लाहौर मार्ग

ये दो मार्ग थे। इनमें से एक दिल्ली, सोनीपत, पानीपत, कुरुक्षेत्र, अम्बाला, सरहिन्द, फिल्लौर, नकोदर, सुलतानपुर और लाहौर था। दूसरा मार्ग दिल्ली, सोनीपत, पानीपत, कैथल, टोहाना, फतेहाबाद, सिरसा, रानिया, भटनेर और लाहौर था।

लेकिन इन सभी मार्गों पर सड़कों की हालत बहुत खराब थी और न ही ये सड़कें किन्हीं बड़े व्यापारिक नगरों से जाकर मिलती थी। इसके अतिरिक्त मध्यकाल में यात्रा करना बहुत ही खतरनाक व असुविधाजनक था। क्योंकि ठगों, डकैतों व डाकुओं से हमेशा यात्रियों व व्यापारियों को अपने जीवन और सम्पत्ति का खतरा बना रहता था। साथ ही परिवहन के साधनों की भी कमी थी। परिवहन के लिए

ज्यादातर बैलगाड़ी, घोड़े व कहीं-कहीं ऊँट का इस्तेमाल किया जाता था। व्यापार व वाणिज्य के लिए परिवहन के इन साधनों की जानकारी हमें विदेशी यात्रियों के समसामयिक भारतीय स्रोतों व लेखों से प्राप्त होती है।

6.0निष्कर्ष-

अतएव हरियाणा प्राचीनकाल से ही समृद्ध फसलों की भूमि के रूप में जाना गया। यहाँ की भौगोलिक सीमाएं हमेशा इसकी ऐतिहासिक व सामाजिक-सांस्कृतिक परम्पराओं और भाषाई समानताओं पर आधारित रही है। यह क्षेत्र सिन्धु-गंगा मैदान के बीच में पड़ता है। इस कारण यहाँ की भूमि कुल मिला कर उपजाऊ रही है, वर्षा की कमी, सदानीरा नदियों का अभाव और ऊष्ण-कटिबंधीय जलवायु के कारण यहाँ कृषि उन्नत अवस्था में नहीं हो सकती थी। न ही यहाँ पर्याप्त खनिज पदार्थों की उपलब्धता थी तथा वन-सम्पदा भी केवल थोड़े से उत्तरी भाग से ही प्राप्त होती था |किसान अपनी फसलों की सिंचाई के लिए अधिकांशतः वर्षा पर ही निर्भर था। कुछ जगहों पर सूखे से निपटने के लिए कुएँ, तालाब एवं जोहड़ जैसे साधन अवश्य प्रयोग में लाए जाते थे। हालांकि कुछ शासकों द्वारा इस क्षेत्र में नहरें भी निकलवाई गई। लेकिन सिंचाई कर की अधिकता के कारण इनका लाभ केवल समृद्ध किसानों को ही मिल पाता था। इसके अतिरिक्त यहाँ के किसानों पर भूमि कर व अन्य करों का बोझ इतना अधिक था कि वह अपना पेट भरने के लिए मुश्किल से ही कुछ बचा पाता था। मध्यकालीन कुछेक शासकों को छोड़कर लगभग सभी ने किसानों का शोषण ही किया।

यहाँ के कृषक वर्ग के साथ-साथ गैर कृषक वर्ग का जीवन भी कुछ सुखद नहीं था। क्योंकि आजकल की तरह ही दक्षिण-पूर्वी पंजाब का यह क्षेत्र गाँवों का प्रदेश था और गाँव पूरी तरह से आत्मनिर्भर थे। यहाँ नगर बहुत कम थे जिस कारण उद्योग व व्यापार की दशा बहुत उन्नत नहीं थी।

7.0 संदर्भ

1. के॰सी॰ यादव, "हरियाणा-दी लैंड एंड दी पीपल", जरनल ऑफ़ हरियाणा स्टडीज इन हिस्ट्री एंड पॉलिटिक्स, मनोहर पब्लिकेशन, नई दिल्ली, नवम्बर, 1976
2. बुद्ध प्रकाश, (सं॰ (गिलिम्पसिस ऑफ़ हरियाणा, कुरुक्षेत्र, 1967
3. इम्पीरियल गजेटियर ऑफ़ इण्डिया, वोल्यूम13-
4. डी॰सी॰ वर्मा व सुखबीर सिंह, हरियाणा, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, 1975
5. के॰सी॰ यादव, हरियाणा का इतिहास, भाग-2, मनोहर पब्लिकेशन, दिल्ली, 1981
6. बी॰एच॰ बाडेन पावेल, द लैंड सिस्टम ऑफ़ ब्रिटिश इण्डिया, वॉल्यूम2-, क्लेरेंडॉन, ऑक्सफोर्ड, 1892
7. तपन राय चैधरी एंड इरफान हबीब) सं॰(, द कैम्ब्रिज इकोनामिक हिस्ट्री ऑफ़ इण्डिया, 1200- 1750, वॉल्यूम-1, कैम्ब्रिज युनिवर्सिटी प्रैस, न्यू दिल्ली, 1982
8. बाबर, बाबरनामा, वॉल्यूम2-
9 .के॰सी. यादव, एंड ए॰आर॰ फोगाट, हरियाणा ऐतिहासिक सिंहावलोकन, पंचकूला, 2005
1 .0 इरफान हबीब, द एग्रेरियन सिस्टम ऑफ़ मुगल इंडिया) 1556-1707), ओयूम इंडिया पब्लिकेशन ऑफ़ इंडिया, न्यू दिल्ली, 1999
11 . दलजीत सिंह, पंजाब :सोशियो-इकोनामिक कंडीशन) 1501-1700 ई॰(, कॉमनवैल्थ पब्लिकेशन, पंजाब, 2004